आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 03/12/2022; Accepted: 06/12/2022; Reviewed: 16/12/2022; Published: 24/12/2022

"भिखारिणी" उपन्यास में स्थित मानवीय संवेदनाएँ

- डॉ.अश्विनी सचिन सदावर्ते
सहायक प्राध्यापक
ईमेल-sadavarte.ashwini@gmail.com
मो.९९००४४२६९५

डॉ.अश्विनी सचिन सदावर्ते, "भिखारिणी" उपन्यास में स्थित मानवीय संवेदनाएँ, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022, (294-297)

भूमिका:

विश्वंभर नाथ शर्मा "कौशिक" हिन्दी साहित्य के जाने माने साहित्यकार हैं। प्रेमचन्द परंपरा के साहित्य को उन्होंने आगे बढाया। प्रेमचन्द की तरह ही उनके साहित्य का विषय भी आदर्शवाद के साथ-साथ यथार्थवाद था। विश्वंभर नाथ जी ने लगभग ३५० कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियाँ चरित्रप्रधान होती थी। वे अपने साहित्य में मनोविज्ञान का सहारा लेते हुए सुधारवादी दृष्टीकोण रखते हैं। उनका भिखारिणी उपन्यास मनुष्य के मन में उठनेवाले मानवीय संवेदानाओं को उजागर करता है। उपन्यास का कथानक बडे ही रोचक तरीके से लिखा गया है। इस उपन्यास को पढते समय कहीं न कहीं मनुष्य अपने जीवन में किस प्रकार सब कुछ होते हुए भी अपने आपको जीवन के एक मोड पर भिखारी के रुप में ही देखता है। खासकर वह जब भी भौतिकवाद को अपने जीवन में सर्वथा अहं मानता है तब उसे उसके जीवन में कभी न कभी इस बात का एहसास जरुर हो जाता है कि जिसके पीछे वह पागल है , वह जीवन का सबसे बड़ा दुख है।

कथानक:

उपन्यास की शुरुआत नन्दराम के भीख माँगने से होती है, जो रामनाथ के द्वार पर भीख माँगने के लिए खडा है और रामनाथ का नौकर उसे बलात हटाने का प्रयास करता है। नौकर की आवाज सुन रामनाथ बाहर निकल आकर देखते हैं। वे उस भिखारी को देख अपने नौकर से उसे खाने के लिए कुछ देने की बात करते हैं,तभी उनकी नजर उस भिखारी के सोलह साल की बेटी पर पड़ती है। उस भिखारिणी के कपडों की दशा देख रामनाथ

उसके लिए एक धोती का प्रबंध करता है। रामनाथ से मिली सहायता से भरपूर होते हुए नन्दराम कृतार्थता से वहाँ से जाने को उद्‌द्यत होता है। उसी समय भिखारिणी और रामनाथ की नजरानजर हो जाती है। भिखारिणी के पहनी हुई धोती की वजह से उसका रूप और यौवन दोनों खिल उठते हैं। उसके जाते समय उसे देख रामनाथ की नजरें उससे हटने का नाम ही नहीं लेती। दो दिनों के बाद फिर से वहीं भिखारी अपनी बेटी के साथ रामनाथ की कोठरी के सामने पिछली बार की तरह इस बार भी मदद की अपेक्षा लिए आ जाता है। अपेक्षाकृत उसे फिरसे मदद मिल जाती है। इस बार भी भिखारिणी रामनाथ की ओर बडे स्नेह से देखती है। उसके बाद कई दिनों तक दोनों भी रामनाथ के यहाँ कहीं पर भी दिखाई नहीं देते। इन दिनों में रामनाथ को उस भिखारिणी का चेहरा बार-बार नजर आता है। कुछ दिनों के बाद भिखारिणी घबराई हुई, अकेली ही, रामनाथ के घर मदद माँगने के लिए आ जाती है। उसके पिता तेज बुखार के कारण बेहाल हो गए थे। रामनाथ से वह अपने पिता की मदद करने की बात कहती है। रामनाथ उसकी मदद करता है। उसे अपने ही मकान के पास एक कमरा देता है। अब भिखारिणी और उसके पिता वहीं रहने लगते हैं। भिखारिणी का नाम जस्सो है,जस्सो के कहने पर उसे वहीं काम मिल जाता है। जस्सो और उसके पिता अब वहीं काम करने लगते हैं। समय बीतते – बीतते देर नहीं लगती। जस्सो और रामनाथ एक-दूसरे से प्रेम करने लगते है। रामनाथ की बहन चम्पा के साथ जस्सो की अच्छी दोस्ती बनती है। इसी बीच रामनाथ का दोस्त ब्रजकिशोर उससे मिलने आता है। रामनाथ सारी बात उसे बता देता है। ब्रजकिशोर के कहने के अनुसार रामनाथ नन्दराम से उसके जाती के बारे में पूछता है, तब नन्दराम अपने ठाकुर होने की बात बताता है। पूछने पर वह अपनी सारी कहानी बताता है। वह सोना नाम की लडकी से प्यार करता था, परंतु दोनों परिवारों की सहमति न होने के कारण सोना की सहमती से वह भागकर सोना के साथ विवाह करता है। उसके बाद वह आजतक अपने माता-पिता से मिला ही नहीं । आज उसे अपना घर छोडे बीस साल हो चुके थे। लेकिन अब वह अपने माता-पिता से मिलना चाहता है , परंतु उसे ड़र है कि कहीं उसके माता-पिता उसे ना नकारे। ब्रजकिशोर नन्दराम को अपने गाँव जाकर उसके माता-पिता से मिल आने के बारे में उसे बताता है। रामनाथ उसे दो दिनों की छुट्टी दे देता है ताकि वह अपने माता-पिता से मिल आए।

अपने माता-पिता से मिलने से पूर्व वह कानपूर में रहने वाले अपने मित्र मनोहर से मिलता है और अपने माता-पिता के बारे में जानने की कोशिश करता है । मनोहर से उसे पता चलता है कि उसके माता-पिता उससे मिलने के लिए बेचैन है। उसकी हर गलती को माफ कर वे उसे अपने साथ रखना चाहते हैं। मनोहर से इस बात का पता चलते ही वह उनसे मिलने के लिए तैयार हो जाता है परंतु उसी समय उसे अपनी उस गलती की याद आती है जिसके लिए उसने अपने माता-पिता के बारे में बिना सोचे समझे अपना घर छोड़ दिया था। वह मनोहर से कहता है कि वह अपने माता-पिता से मिलना तो चाहता है परंतु उसे इसी बात का ड़र है कि वे उसे माफ करेंगे भी या नहीं? उसकी बेटी को अपनाएँगे या नहीं? वह वापस रामनाथ के घर चला जाता है ।

रामनाथ से अपने माता-पिता से न मिलने की बात कहता है। दिन गुजरते जाते हैं। एक दिन मनोहर गाँव में रहने वाले नन्दराम के माता-पिता से मिलता है। वे उससे नन्दराम की खबर पूछते हैं तब वह बताता है कि वह कानपूर में किसी के घर काम करता है। बहुत कहने के पश्चात मनोहर उन दोनों को नन्दराम से मिलवाने के लिए कानपूर लेकर आता है। दो दिनों तक कानपूर में रहने के बाद उन दोनों को वह जहाँ नन्दराम रहता था वहाँ लेकर जाता है। वहाँ उस समय नन्दराम तो नहीं रहता परंतु रामनाथ उसके माता-पिता उन सबसे मिलकर दोनों प्रसन्न हो जाते हैं। थोडी ही देर में नन्दराम भी वहां पहुंचता है। अपने माता-पिता से मिलकर नन्दराम खुश हो जाता है।

नन्दराम सोना से बहुत प्यार करता था। परंतु उसके परिवार से सोना से विवाह करने की अनुमति उसे नहीं थी। सोना के कहने पर वे दोनों घरवालों से छिपकर विवाह कर लेते हैं । विवाह के पाँच साल के बाद सोना एक बच्ची को पीछे छोड स्वर्ग सिधार जाती है। नन्दराम बहुत दुखी हो जाता है। परंतु नियती का खेल किसी को कभी समझ में नहीं आया। कहीं कोई काम-काज की व्यवस्था न होने के कारण वह अपनी छोटी सी बच्ची यशोदा, जिसे वह प्यार से जस्सों कहता था उसे लेकर भीख माँगने लगता है। जिसके लिए उसने अपने माता-पिता को छोड़ा था आज उसके चले जाने के लगभग पंद्रह साल के बाद उसके माता-पिता उसे मिले थे। अब वह उन्हें छोडना नहीं चाहता था।

जस्सो,जो उनकी नाती थी उसे देख नन्दराम के माता-पिता बहुत भावुक हो उठते हैं। जस्सो और नन्दराम उनके साथ गाँव जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। सारा समान समेटकर जब नन्दराम और जस्सो जाने के लिए निकलते हैं,तब रामनाथ बहुत दुखी हो जाता है। उसने अभी तक अपने मन की बात जस्सो को नहीं बताई थी। जस्सो भी उसे बहुत चाहती थी। परंतु वह भी कभी अपने अव्यक्त प्रेम को व्यक्त न कर सकी।

जस्सो को गाँव गए कई दिन गुजरते है,कई दिनों तक जस्सो और नन्दराम की चिठ्ठियाँ आती रही। परंतु कुछ ही दिनों के बाद चिठ्ठियों का आना बंद हो गया। यहाँ रामनाथ जस्सो को भुलाने की कोशिश करता परंतु उसे जब तब सिर्फ जस्सो ही नजर आती। एक दिन किसी कारण जस्सो और नन्दराम कानपुर रामनाथ से मिलने आते हैं,तब नन्दराम को दोनों के बीच के नाजुक संबंध का पता चलता है। घर आते ही वह जस्सो से बात करता है। उसके बाद वह फिरसे रामनाथ से मिलकर सारी बातें स्पष्ट रूप से जानने का प्रयास करता है। तब उसे इस बात का एहसास हो जाता है कि रामनाथ के माता-पिता इस विवाह के लिए तैयार नहीं होंगे। तब रामनाथ उससे कहता है कि वे भागकर शादी करेंगे । एक बार शादी हो जाती है तो उसके माता-पिता कुछ नहीं करेंगे। परंतु जस्सो को यह प्रस्ताव मंजूर नहीं होता। वह रामनाथ को संदेश भेजती है कि वह अपनी खुशी के लिए किसी को दुख नहीं पहुँचाना चाहती। रामनाथ को उसकी इस बात पर क्रोध आता है। इसी ईर्ष्या में वह विवाह कर लेता है,और अपने विवाह में जस्सो को बुलाना नहीं भूलता। जस्सो उसके इस विचार से बिल्कुल भी विचलित नहीं होती। वही रामनाथ की दुल्हन का श्रृंगार बडे ही स्नेह से करती है। विवाह के पश्चात जस्सो और नन्दराम अपने

गाँव वापस जाने के लिए निकलते हैं। जाते समय इस बार भी दोनों की नजरानजर हो जाती है। इस बार भी रामनाथ को जस्सो की नजरों में वही स्नेह नजर आता जो उसने उसे पहली बार देखने के बाद देखा था और जस्सो को रामनाथ की नजर में पश्चात्ताप के अलावा कुछ नजर नहीं आता।

पाँच साल बीत जाते है। इसी बीच जस्सो रामनाथ की राधा बनकर रह जाती है। नन्दराम के माता-पिता अपनी पोती के विवाह का सपना देखते-देखते स्वर्ग सिधारते हैं। इक दिन नन्दराम उससे कहता है कि अगर वह रामनाथ से इतना प्रेम करती है तो अब भी वह उसका विवाह उससे करने के लिए तैयार है। परंतु किसी का बसा बसाया घर तोड अपनी खुशियों का महल बनाना जस्सो को पसंद नहीं है। वह अपने पिता से कहती है कि,1" हम-तुम जब तक घूमते - फिरते रहें और भिक्षावृत्ति करते रहें तब तक इतने दु:खी कभी नहीं रहें। जबसे हमने उसे छोड़ा और सुख को प्राप्त करने की चेष्टा की ,तभी से दु:ख ने हमारा पल्ला पकडा।" जो कुछ भी हमारी संपत्ति है उसे गरिबों के लिए छोड कहीं दूर चले जाना चाहिए। अपनी बेटी की बात नन्दराम को सही लगती है। सबकुछ छोड दोनों तीर्थयात्रा पर निकलते हैं। वहीं एक आश्रम में ठहरें रामनाथ से जस्सो की मुलाकात हो जाती है। उसे देख रामनाथ को शर्मिंदगी लगती है, क्योंकि कुछ ही दिन पहले ही वह यह खबर अखबार में पढता है कि एक जमींदार और उसकी बेटी ने अपनी सारी संपत्ति गरिबों के लिए छोड दी। आज रामनाथ जस्सो को वहाँ देख कर अपने आपसे सबसे बड़ा भिखारी होने का अनुभव कराता है।

निष्कर्ष:

कईं बार हम देखते हैं समाज में ऎसे बहुत से लोग हैं जो समाज में केवल अपनी छवि बनाने में लग जाते हैं। एक तरफ ऐसे लोग हैं जो जीवन की सच्चाई को ढूँढने का सफल प्रयास करते हैं और खुश रहते हैं। रामनाथ जैसे लोग आज समाज में भरे पडें हैं, परंतु नंदराम और जस्सो जैसे लोग कम ही पाए जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह,लोकभारती प्रकाशन-२०१५

भिखारिणी-विश्वंभर नाथ शर्मा "कौशिक"

****